उच्चारणाचार्य

जीवन-परिचय : उच्चारणाचार्य का उल्लेख कषायपाहुड की जयधवला टीका में अनेक स्थानों पर आया है। साथ ही अनेक उल्लेखों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उच्चारणाचार्य ने आचार्य यतिवृषभ द्वारा रचित 'चूर्णिसूत्रों' की विशेष उच्चारणविधि और व्याख्यान करने की विधि सबको सिखाई थी। अर्थात् चूर्णिसूत्रों का उच्चारण और व्याख्यान करने की कला उच्चारणाचार्य ने ही सबको सिखाई थी। यतिवृषभाचार्य ने अपने चूर्णिसूत्रों में जिन सुगम तथ्यों की विवरणवृत्ति नहीं लिखी है, उनका स्पष्टीकरण उच्चारणाचार्य ने किया है।

आचार्य यतिवृषभ द्वारा लिखित अर्थ का व्याख्यान करने के कारण उच्चारणाचार्य का समय यतिवृषभ आचार्य के पश्चात् का होना चाहिए। यतिवृषभ आचार्य का समय ई. सन् की द्वितीय शती है, अतएव उच्चारणाचार्य का समय भी ई. सन् की द्वितीय का अन्तिम पाद माना जा सकता है।

रचना-परिचय : उच्चारणाचार्य द्वारा लिखित कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है, परन्तु आगम-परम्परा में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि यतिवृषभ आचार्य के चूर्णिसूत्रों के आधार पर उच्चारणाचार्य ने अपना व्याख्यान दिया है। चूर्णिसूत्रों की उच्चारणविधि आपने ही सबको समझाई थी।